RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 13 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 31 अगस्त 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड की राजनीति में चकाचौंध

- चुनाव तैयारी में जुटे दिग्गज
- पार्टियों में होने लगी बम्पर भर्ती
- टिकट न मिलने पर बिदकेंगे
- बड़े नेताओं के सरकने का संदेह
- टांग खींचने के लिये तैयार हैं
- काले चिट्ठों का वाचन होगा

कार्यालय प्रतिनिधि

देवभूमि उत्तराखण्ड को पृथक राज्य बनने के साथ ही नेतागर्दी की बहार होने लगी थी, जो बढ़ती ही जा रही है। अब जिस प्रकार की बढ़त इसमें हुई है वह राजनीति में चकाचौंध कही जायेगी। गलीकूचे से लेकर राजधानी तक जिस गति से नेतागण उपजे हैं वह एक प्रकार का उद्योग ही है यानी 'नेतागर्दी' से मनमाफिक कार्य हो रहे होंगे। यही कारण है हर छोटे-बड़े पार्टी नेताओं पर खुलेआम आरोप लग रहे हैं। आरोप लगते रहें इससे क्या जो होगा? क्योंकि जितनी बड़ी संख्या में धमाचौकड़ी होने लगी है वह सफेदपोश को कतार में रखती है।

प्रदेश में होने वाले आगामी चुनावों को लेकर दिग्गज जुट चुके हैं और लग रहा है पार्टियों में भर्ती मेला चल रहा है। पार्टी संगठन से लेकर अन्य में स्थानीय नेताओं को खपाया जा रहा है और छुटभैयों को भी अवसर मिल रहा है। टिकट के लिये दांव चल रहे नेता मौके-बेमौके अपनी बात रख रहे हैं। साथ ही अपनी पार्टी को चेता भी रहे हैं कि टिकट मिले न मिले वह चुनाव मैदान में रहेंगे। ऐसे में पार्टियों से उनके बड़े नेताओं के सरकने का सन्देह भी बना हुआ है। पार्टी में ही टिकट को लेकर टांग खींचने के लिये भी तैयार बैठे हैं। इतना ही नहीं, चुनाव नजदीक आते ही एक-दूसरे के काले चिट्ठों का वाचन भी होगा। यह सब इसलिये भी लग रहा है क्योंकि जिस प्रकार से पार्टी अनुशासन की बात करने के बावजूद सोशल मीडिया पर नेता उवाच सुनाई दे रहे हैं वह आने वाले दिनों की हलचल है। बड़े दल भाजपा-कांग्रेस जिस

शेष पृष्ठ 2 पर

लोक कथाएं —— यू.आर.टम्टा

तुम दिल्ली हम आगरा

रास्ता जंगल से होकर गुजरता था तथा घने पेड़ों के कारण रास्ते में धूप बिल्कुल नहीं मिली, इसलिये ठण्ड के मारे उसका बुरा हाल था। अत: वह धूप में, बदन को कुछ गरम करने के उद्देश्य से, एक खुली जगह पर बैठ गया। उम्र में वह 60 वर्ष से अधिक का लगता था। सिर के सारे बाल सफेद थे, मुँह पर झुरियाँ पड़ गयीं। बुढ़ापे में ठण्ड अधिक लगती ही है, इसलिये वह मोटा पायजामा, जुराब-जूता, दस्ताने पहिना हुआ था। रह-रह कर वह खांसता रहता। वह धूप में बैठा ही था कि वहाँ पर एक दूसरा व्यक्ति भी पहुँच गया, जो उम्र में अधेड़ लगता था। शायद खुली जगह पर छिटकती धूप को देख कर वह व्यक्ति भी वहाँ पर आ गया था। उस निर्जन स्थान पर पहले ही से बैठे एक व्यक्ति को देख वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ- 'चलो, अकेले-अकेले रास्ता नहीं कट रहा था, साथ के लिये कोई तो मिला'-यह सोचते हुये वह उस बूढ़े व्यक्ति के पास ही चला गया। बूढ़े ने पूछा- 'कहाँ के हो?' 'आगरे का'-और आप कहाँ के। बूढ़े ने उत्तर दिया- 'दिल्ली का।' अधेड़ ने कहा- 'चलो इत्तिफाक से मुलाकात हो गई, वर्ना तुम दिल्ली हम आगरा भेंट कहाँ से होय।' फिर बूढ़े ने अधेड़ से पूछा- 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'शेष चन्द'- अधेड़ ने कहा। बूढ़े ने भी बताया- 'तो मेरा नाम निशेष चन्द है।' अधेड़ ने मुस्कराते हुए बोला- 'यह तो बहुत अच्छी बात है, हम दोनों के नाम भी एक से ही हैं।' बूढ़े ने भी मुस्कराहट के साथ ही जवाब दिया- 'बहुत अच्छी बात।'

बूढ़े ने शेष चन्द से पूछा- 'इधर कहाँ से निकल आए?' शेष चन्द ने बताया कि वह व्यापार के सिलसिले में शहर जा रहा है। उसने म्यान से चमचमाती तलवार निकालते हुये कहा- 'यह चाँदी की तलवार है, जो मेरे दादा को मुगल सम्राट औरंगजेब ने भेंट की थी।' 'औरंगजेब ने?' आश्चर्य के भाव चेहरे पर लाते हुए निशेष चन्द पूछा तथा तलवार को ध्यान को से देखा। उसमें फारसी में लिखा था- 'अल्लाह-ओ-अकबर।' तलवार चाँदी की ही थी, इसमें सन्देह की कोई गुन्जाइश नजर नहीं आ रही थी। शेष चन्द ने फिर आगे बताया- 'आपको तो मालूम ही होगा कि दिल्ली का मुगल बादशाह औरंगजेब बड़ा ही उदार विचारों का सम्राट था, वह सभी धर्मों का आदर करता था, खासकर हिन्दू धर्म का तो वह बहुत ही बड़ा पक्षधर था। उसने कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार भी किया था। मेरे दादा को पूरी गीता कण्ठस्थ थी, वह गीता के बहुत बड़े प्रवचनकर्ता थे। एक बार औरंजगेब ने गीता प्रवचन सुनाने उन्हें बुला भेजा। गीता प्रवचन सुनकर बादशाह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने यह तलवार मेरे दादा को भेंट कर दी और तभी से पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह तलवार हमारे पास ही है। इस तलवार का मूल्य यदि यूं ही देखें तो कोई अधिक नहीं होगा, आखिर चाँदी की ही तो है परन्तु इसका बड़ा ऐतिहासिक महत्व है, और पुरातत्व के हिसाब से देखें तो यह अमूल्य वस्तु है।' कुछ देर रुक कर शेष चन्द और आगे बताने लगा- 'राजा का बेटा इस तलवार के पीछे पड़ा है। कहता है कि तुम्हें इसके बदले बीस घोड़े दे देते हैं, तलवार हमें दे दो। पर, इससे हमारी भावनायें जुड़ी हैं, इसलिये मै। इसे बीस घोड़ों के बदले देने को कतई तैयार नहीं हूँ। यदि मैं इसे बेचने पर उतर आऊँ तो इसके बदले बीस हाथी भी मिल सकते हैं। परन्तु अब लगता है, राजकुमार ने भी इस तलवार को लेने की ही ठान रखी है। वह इसे बलपूर्वक भी ले लेगा। इसलिये सोचता हूँ कि शहर में जाकर इसे अब अच्छे दामों पर बेच दूँ, न रहेगा बांस न बजेगी बाँसुरी।'

निशेष चन्द ने सोचा तलवार तो मुगलकालीन ही है, पर औरंगजेव ने गीता प्रवचन पर प्रसन्न होकर यह तलवार भेंट की होगी, इसकी कोई सम्भावना नहीं थी। उसे मालूम था कि औरंगजेब कट्टर मुगल था, उसने कई मन्दिर ध्वस्त करवाये थे, तब वह भला क्या गीता प्रवचन सुनेगा, और यदि सुनेगा भी तो क्या उस पर प्रसन्न होकर यह बेशकीमती तलवार भेंट कर देगा। फिर भी उसने अपने मन की शंका शेष चन्द को नहीं बताई। अब बारी निशेष चन्द की थी। उसके पास भी एक थैली थी, जिसमें कोई वजनदार चीज थी। उसने थैली का मुँह थोड़ा खोल कर दो-तीन सिक्के बाहर निकाले व शेष चन्द की ओर बढ़ाते हुये बोला, 'देखों यह सिक्के किस जमाने के हैं।' शेष चन्द ने गौर से देखा। यह सोने के बहुत पुराने सिक्के मालूम पड़ते थे। निशेष चन्द ने ही बताया- 'यह औरंगजेब के जमाने के ही सिक्के हैं। औरंगजेब हिन्दू धर्म का बड़ा आदर करता था। मेरे पिता उसके दरबार में ही पूजा पाठ के लिये नियुक्त थे। समय-समय पर उसने प्रसन्न होकर भेंट स्वरूप यह सिक्के मेरे पिता जी को दिये थे। तुम्हारी तलवार की तरह यह सिक्के भी हमारे

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

इतिहास को नकारा नहीं जा सकता

हल्द्वानी के निकट रानीबाग में चित्रेश्वर धाम में कथित अतिक्रमण और शनि मन्दिर निर्माण को लेकर पर्वतीय समाज में नाराजी बढ़ती जा रही है। इस मुद्दे को लेकर चल रहे अभियान में कहा गया है कि कत्यूरी राजवंश की ऐतिहासिक धरोहर और राजमाता जिया की तपोभूमि है रानीबाग। पर्वतीय समाज की आस्था पर चोट पहुँचाते हुए यहाँ पौराणिक मन्दिर परिसर में कथित छेड़छाड़ की गई है। इस पूरे मामले को लेकर कत्यूरी समाज का प्रतिनिधिमण्डल शासन-प्रशासन से मिल कर चित्रेश्वर के महात्मय को बरकरार रखने की बात कर चुका है।

यह सत्य है कि ऐतिहासिक धरोहरों को संवारे बिना हम अपने इतिहास का चाहे कितना ही बखान करें, उसमें वह बात नहीं रहती जो साक्ष्य के रहते हो। लेकिन इतिहास की अमूल्य धरोहरों को किस प्रकार से अपनों ने ही लूट लिया वह भी किसी से नहीं छिपा है। हमें इन प्राचीन धरोहरों को संरक्षित करने के लिये सरकार के भरोसे नहीं रहना चाहिये। साथ ही इन पर अतिक्रमण करने वालों को रोकना चाहिये। ये धरोहर एक प्रकार से हमारे पुरखों की यादों के अलावा हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं।

रानीबाग स्थित चित्रशिला घाट का वर्णन स्कन्द पुराण के मानसखण्ड में आता है। रानी जियारानी ने किस प्रकार से विदेश आक्रान्ताओं से युद्ध किया, इन सब बातों का वर्णन लोक कथाओं, गाथाओं, इतिहास में वर्णित है। कत्यूर वंश के लम्बे इतिहास के साथ ही रानी के बाग यानी रानीबाग को याद करते हैं। एक विशेष पत्थर भी गौला/गार्गी नदी तट पर है, जिसे जियारानी का घाघरा कहा जाता है। इन सारी ऐतिहासिक बातों और और मान्यता के बाद भी यदि इस स्थल पर अतिक्रमण होता है या इसके स्वरूप को बदलने का प्रयास होता है तो वह इसके साथ छेड़छाड़ ही है। इसलिये इस प्रकार के मामलों में बहुत सावधानी की जरूरत है। वैसे भी, यदि कितनी ही इमारतें खड़ी कर दी जाएं लेकिन इतिहास को नकारा नहीं जा सकता है। चित्रेश्वर धाम ही क्या, इस प्रकार की अन्य धरोहरों को संरक्षित रखना होगा।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

बर्फीले रास्ते से कारोबार की तैयारी

नई दिल्ली। लाल सागर, स्वेज नहर और दूसरे समुद्री रास्तों पर बढ़ते तनाव और युद्ध के वैश्विक व्यापार को समुद्री मार्गों की सुरक्षा के प्रति सतर्क किया है। ऐसे में चीन यूरोप तक पहुंचने के लिये आर्कटिक समुद्री मार्ग का इस्तेमाल बढ़ाने की तैयारी में है। भारत ने भी 2027 में इस मार्ग पर पहला जहाज परीक्षण के लिये भेजने की योजना बनाई है।

अफवाह पर हॉस्टल छोड़ दिया

अमरावती। महाराष्ट्र के अमरावती जिले में सरकारी आवासीय स्कूल में भूतों की अफवाहों के बाद 600 छात्रों ने हॉस्टल छोड़ दिया। बताया जाता है कि 22 जुलाई को इस घटना की शुरुआत तब हुई जब चार छात्राओं ने अचानक अजीब व्यवहार करना शुरू कर दिया।

चोरी हुईं अनमोल पेंटिंग मिलीं

रोम। इटली के एक संग्रहालय से चोरी हुई तीन अनमोल कलाकृतियों को बरामद कर लिया गया है। इनमें महान कलाकार पॉल सेजान, ऑगस्ट रेनॉयर और हेनीर मातिस की कृतियां शामिल हैं। यह चोरी परमा शहर के पास स्थित रोक्का फाउंडेशन संग्रहालय में हुई थी। अभी जाँच चल रही है।

आकाशगंगा के बाहर दूरबीन से ढूंढ

टेक्सास। नासा के दबल स्पेस टेलीस्कोप के पुराने डाटा का अध्ययन करते हुए खगोलशास्त्रियों ने आकाशगंगा के बाहर पहली बार तारों की एक धुंधली धारा की खोज की है। यह धारा एक बेहद कम चमक और फैली हुई संरचना वाली आकाशगंगा में पाई गई, जिसके भारी द्रव्यमान ने इन तारों को खींचकर अलग किया।

मंगल की चट्टानों में मिले खनिज

वाशिंगटन। नासा के परसेवरेंस रोवन ने मंगल के जेजेरो क्रेटर क्षेत्र की तीन चट्टानों में कोरंडम के संकेत खोजे हैं। पृथ्वी पर यही खनिज मणिक और नीलम जैसे रत्नों का आधार हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार यह खोज मंगल के प्राचीन भूगर्भीय इतिहास के बारे में अहम सुराग दे सकती है।

मृत्युदंड की साज के लिये फांसी ही सही

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मौत की सजा के लिये पाए दोषियों को फांसी देने के मौजूदा तरीके में दखन देने से इन्कार किया है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस सन्दीप मेहता की पीठ ने फांसी के बजाय सम्मानजनक तरीके से मौत की सजा देने की मांग वाली याचिकाएं खारिज कर दी।

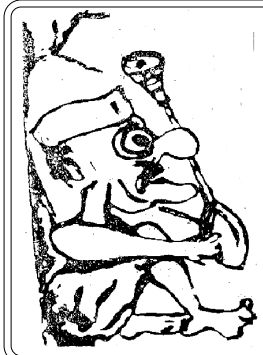

फसक

दाज्यू, बात-बात पर कपड़योव हो जा रही ठैरी

जितनी फरफराट है उससे ज्यादा बलबलाट हो रही है बल

दाज्यू, राज्य में कौतिकों की बहार छाई हुई है लेकिन चुनाव चक्कर को लेकर बात-बात पर कपड़योव हो जा रही ठैरी। वैसे भी अन्दाज लगाना कठिन हो गया है कि कौन किसको कपोर देगा। हमारा दीनू भी उचेड़खाने को तैयार रहता है। कह रहा था- 'पार्टी ने टिकट नहीं दिया तो वह पानी की टंकी में चढ़ जाएगा और नारे लगाएगा।'

दाज्यू, छावनी परिषद रानीखेत के पर्यावरण मित्रों के मुंशी मोहित राजौरिया से मारपीट के आरोप पर हंगामा हो गया। पुलिस द्वारा काफी देर समझाने के बाद व्यापारी ने लिखित माफी मांगी तो मामला शान्त हुआ। द्वाराहाट के कफड़ा निवासी तुलशा राम के साथ ऑनलाइन ठगी हुई है। जालसाज ने जाली दस्तावेजों के साथ 276050 रुपये की चपत लगा दी बल। इसकी रिपोर्ट दर्ज होने के बाद जाँच हो रही है। रुद्रपुर में बाजार में निकल रहे जुलूस में तलवार, तमंचे लेकर प्रदर्शन करने वाले 8 युवक पुलिस ने पकड़े हैं। अलीगढ़ से गांजा लेकर देहरादून के थाना नेहरू कालोन पहुंचे दो तस्कर पुलिस ने धरे हैं। तलाशी में सात किलो से अधिक गांजा बरामद हुआ बल।

दाज्यू, जमाने में जितनी फरफराट है उससे ज्यादा बलबलाट हो रही है बल। सब लगपड़ के निभाने भी ठैरे। फूलों की खेती के लिये मिलने वाली सरकारी अनुदान राशि की फाइल आगे बढ़ाने के एवज में 35 हजार की रिश्वत मांगने पर हरिद्वार में क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी को पकड़ लिया गया। नैनीताल के ज्योलीकोट क्षेत्र में महिला से छेड़छाड़ के आरोपी पर्यटकों को कथित तौर पर 18 हजार रुपये लेकर छोड़ने के मामले में में चौकी प्रभारी और कांस्टेबल को लाइन हाजिर कर दिया बल।

दाज्यू, रानीखेत-चिलियानौला नगर पालिका बोर्ड में नामित भाजपा सभासदों के समारोह में न पहुंचने से आयोजन फीका रहा। चैयरमैन और ईओ पूरी तैयारी के साथ इन्तजार करते रह गये। क्या जो कहें? -तुम्हारा भुली झकरुवा

उत्तराखण्ड की.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

तरह राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चला रहे हैं वह आगामी लोकसभा को देखते हुए हैं लेकिन उत्तराखण्ड में आगामी विधान सभा चुनाव को लेकर भी इनकी सतर्कता है। यही कारण है कि पार्टी के बड़े नेताओं की सभा और सम्पर्क अभियान हुआ है। भाजपा ने चुनाव तैयारी को धार देते हुए मंथन किया है। इसमें संगठन को सक्रिय किया जा रहा है। इसी प्रकार कांग्रेस की टीम हर प्रकार से जिताऊ उम्मीदवार को लेकर तैयारी में हैं।

कांग्रेस और भाजपा में दावेदारी को लेकर जिस प्रकार से नाम उछल रहे हैं उससे नेताओं की बेचैनी भी बढ़ती जा रही है। बद्रीनाथ में कांग्रेस के गौरव फर्स्वाण ने दावेदारी कर हलचल की है। जबकि इस सीट पर कांग्रेस के मौजूदा विधायक लखपत सिंह बुटोला हैं, जिनकी दावेदारी मजबूत है। हल्द्वानी सीट पर दोनों बड़ी पार्टियों के नेता टिकट को लेकर बेचैन हैं। कालाढूंगी सीट पर भाजपा के भीतर ज्यादा सरसराहट है क्योंकि टिकट को लेकर अन्य दावेदार दांव चल चुके हैं। गंगोलीहाट सीट पर दावे करने वाले पीछे नहीं हट रहे हैं लेकिन अन्त तक इन्हें मना लिया जायेगा। भीमताल सीट पर टिकट को लेकर कांग्रेस में घमासान है जबकि भाजपा की ओर से मंत्री रामसिंह कैड़ा ही चेहरा दिख रहे हैं।

ज्योतिष की बातें 296

2 सितम्बर 2026 को शुक्र नीचराशि से निकलकर स्वराशि तुला में प्रवेश करेगा, जहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी अतः शुक्र अत्यन्त बलवान रहेगा। शुक्र विवाह, जीवनसाथी, दाम्पत्य जीवन, कामेच्छा, काव्य, सौन्दर्य, नेत्र, वाहन, शारीरिक सुख, भोग, धन, वस्त्र, आभूषण, रत्न आदि का कारक होता है । मन्त्रेश्वरख्रत फलदीपिका के अनुसार शुक्र केवल छठवें, सातवें और दसवें स्थान पर अशुभ होता है अन्य स्थानों पर शुभ होता है। अतः अगले 65 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में तुला, कन्या, सिंह, कर्क, मिथुन, मीन, कुम्भ, धनु व वृश्चिक राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष तीन राशियों को भी सामान्य शुभफल प्रदान करेगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी- यह पर्व भाद्रपद कृष्णपक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी तिथि में मनाया जाता है। तदनुसार शुक्रवार, 4 सितम्बर 2026 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाया जाएगा।

इस स्थायी स्तम्भ में किसी ग्रह विशेष का सामान्य गोचर फल प्रस्तुत किया जाता है। व्यद्रि विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, दशान्तर्दशा आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार 178

विकल्प बहुत हैं

तलाक क्यों होते हैं? क्योंकि पुनर्विवाह का विकल्प उपलब्ध है। पहले जमाने में दूसरा विवाह नहीं होता था तब तलाक भी नहीं होता था। विकल्प बहुत अधिक होने के कारण व्यक्ति दुविधा में पड़ जाता है कि करें तो क्या करें। आदमी बाजार जब कोई वस्तु खरीदने जाता है तो यदि दो-तीन विकल्प हैं तब तो वस्तु खरीद सकता है, जब उसके सामने सैकड़ों हजारों विकल्प रख दिए जाएं तो समय तो बर्बाद होता ही है और साथ में वस्तु को खरीदना भी दुष्कर हो जाता है। समय और दिमाग भी बहुत अधिक खर्च होता है।

पहले एक दो जगह बात चलने पर ही शादी के लिए रिश्ता तय हो जाता था। आजकल शादी के लिए सोशल मीडिया और अन्य विज्ञापन के माध्यमों के कारण सैकड़ों हजारों रिश्ते उपलब्ध रहते हैं। उन रिश्तों में सर्वोत्तम रिश्ता चयन करते-करते पूरी जवानी व्यतीत हो जा रही है और अन्त में खराब रिश्ते से ही समझौता करना पड़ रहा है।

इसी प्रकार नौकरी के लिए भी कहा जा सकता है व्यापक रूप से पूरे देश में, हर प्रकार की नौकरी के लिए विज्ञापन होने से सैकड़ों नौकरियां उपलब्ध रहती हैं और कम्पनी के लिए भी हजारों लाखों लड़के उपलब्ध रहते हैं। लेकिन योग्य कर्मचारी मिलना कठिन हो रहा है। मेरे विचार से यह अव्यवस्था अत्यधिक विकल्प होने के कारण फैल रही है। नौकरी के लिए भी विज्ञापन व्यापक स्तर पर नहीं करना चाहिए। छोटी नौकरी के लिए स्थानीय स्तर पर और बड़ी नौकरी के लिए उच्च स्तर पर विज्ञापन किया जाना चाहिए। जीवन के हर क्षेत्र में विकल्पों को सीमित किया जाना बहुत आवश्यक है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी

B++ NAAC

भारतीय पुनर्वास परिषद् | UGC 12-B Recognised | NCVET Approved | AICET Approved | NCTE Approved

छात्रवृत्ति
ST, SC, एवं OBC शिक्षार्थी हेतु

प्रवेश 01 जुलाई 2026 से प्रारंभ

विभिन्न कार्यक्रम

यूजीसी-डीईबी, आर.सी.आई, एआईसीटीई, एनसीवीईटी, एनसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त कार्यक्रम:

स्नातक डिग्री : बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम., बी.सी.ए., बी.बी.ए., बी.टी.टी.एम., बी.एड. (ओडीएल),बी.एल.आई.एस. , बी.एड. (विशेष शिक्षा), बी.ए.(योग)

स्नातकोत्तर डिग्री: एम.ए., एम.एस.सी., एम.बी.ए., एम.सी.ए, एम.कॉम.,एम.एस.सी.(आईटी),एम.एस.सी.(साइबर सुरक्षा), एम.ए. (योग), एम.एस.सी. (जीओ इन्फार्मेटिक्स), एम.ए.जे.एम.सी. (पत्रकारिता एवं जनसंचार), एम.टी.टी.एम., एम.ए.(मानवाधिकार),एम.एड.(विशेष शिक्षा),एम.एल.आई.एस.

डिप्लोमा/सर्टिफिकेट: ज्योतिष, योग विज्ञान,आई.टी., पत्रकारिता एवं न्यूमीडिया, गढ़वाली, कुमाऊँनी, नेपाली, पर्यटन, आर.टी.आई, संस्कृत, कृषि, भू-सूचना विज्ञान, कंप्यूटर अनुप्रयोग, डिजिटल मार्केटिंग,भारतीय ज्ञान परम्परा, असिस्टेंट होम स्टे मेनेजर (NCVET द्वारा मान्यता प्राप्त) आदि।

अतिरिक्त गतिविधियां: एनएसएस और रेड क्रॉस

प्रवेश हेतु

प्रमुख विशेषताएं

- उत्तराखंड विधानसभा अधिनियम संख्या 23/2005 द्वारा स्थापित
- राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विश्वविद्यालय
- कामकाजी और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के विशेष अवसर
- NEP-2020 के अनुसार सभी यूजी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम में प्रवेश
- ऑनलाइन प्रवेश: शीतकालीन सत्र (जनवरी) और ग्रीष्मकालीन सत्र (जुलाई)
- शहीद सैनिकों की विधवाओं, घरेलू निर्धन महिलाओं, दिव्यांगजनों, जेल कैदियों, तृतीय जेंडर के लिए शुल्क में विशेष छूट
- अध्ययन केंद्र, परीक्षा केंद्र, कार्यक्रम सुधार/परिवर्तन के लिए ऑनलाइन व्यवस्था
- परामर्श सत्र, प्रयोगशाला एवं कार्यशाला का आयोजन
- प्रवेश से लेकर परीक्षा, डिग्री के लिए ऑनलाइन आवेदन की व्यवस्था
- सैनिकों के लिए विशेष अध्ययन केंद्र
- मुद्रित अध्ययन सामग्री न लेने वाले शिक्षार्थीयों को प्रवेश शुल्क में 15% की छूट

ऑनलाइन असाइनमेंट्स
ई- पाठ्य सामग्री
नेपाली अभ्यर्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ

शिक्षार्थी सहायता सेवाएँ
क्षेत्रीय केंद्र: 08
गढ़वाल क्षेत्र: देहरादून, रूड़की, पौड़ी, कर्णप्रयाग, उत्तरकाशी
कुमाऊँ क्षेत्र: हल्द्वानी,रानीखेत, पिथौरागढ़
शिक्षार्थी सहायता केंद्र :142+
आदर्श अध्ययन केंद्र : 02
हल्द्वानी (16000) एवं, देहरादून (11000)

फ़ोन
05946-286000
05946-286043

वेबसाइट
www.uou.ac.in
https://online.uou.ac.in

admission@uou.ac.in
exam@uou.ac.in

पता:
विश्वविद्यालय मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे, तीनपानी बाईपास, हल्द्वानी-263139, नैनीताल, उत्तराखंड

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

डॉ.डी.आर.पुरोहित को इन्द्रमणि बडोनी सम्मान

देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलन के सूत्रधार एवं पर्वतीय गांधी नाम से विख्यात स्व. इन्द्रमणि बडोनी द्वारा उत्तराखण्ड के समाज के लिये सांस्कृतिक एवं सामाजिक अवदान को सनद बनाए रखने के उद्देश्य से स्थापित इन्द्रमणि बडोनी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा चतुर्थ इन्द्रमणि बडोनी स्मृति सम्मान राज्य की कला एवं संस्कृति के जागरण में जुटे डॉ. डी.आर.पुरोहित को दिया गया। दून विवि की कुलपति सुरेखा डंगवाल की अध्यक्षता में हुए इस आयोजन में स्व. बडोनी का स्मरण करने के साथ ही सभी ने डॉ. पुरोहित के कार्यों की सराहना की।

देघाट में शहीद दिवस पर श्रद्धासुमन

स्याल्दे। देघाट में शहीद हरिकृष्ण उप्रेती और हीरामणि बड़ौला की स्मृति में शहीद दिवस मनाया गया। विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों के साथ प्रशासनिक अधिकारियों ने शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। देघाट स्थित खल्डुवा और भेलीपार स्थित शहीदों के गांवों में भी श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किये गये।

हाईकोर्ट शिफ्टिंग का विरोध शुरू

नैनीताल। हाईकोर्ट को हल्द्वानी शिफ्ट किए जाने की चर्चाओं के बीच जिला बार एसोशिएशन के अधिवक्ताओं ने इसका विरोध शुरू कर दिया है। सभा को सम्बोधित करते हुए जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अरुण सिंह बिष्ट ने कहा कि कोर्ट को हल्द्वानी करना नुकसानदेह होगा। सभा में पूर्व अध्यक्ष ओंकार गोस्वामी, नीरज साह, मनीष मोहन जोशी सहित तमाम लोगों ने सम्बोधित किया।

चम्पावत को स्वास्थ्य क्षेत्र बड़ी में सौगात

चम्पावत। आदर्श जनपद चम्पावत को स्वास्थ्य क्षेत्र में एक और बड़ी सौगात मिली है। जिला चिकित्सालय में करीब 50 लाख रुपये की लागत से स्थापित ब्लड कम्पोनेंट सेपरेशन यूनटि का मुख्य मंत्री पुष्कर सिंह धामी ने वर्चुअल माध्यम से शुभारम्भ किया। सीएम की ओर से दायित्वधारी श्याम नारायण पाण्डेय सहित अन्य जनप्रतिनिधियों ने जिला अस्पताल में फीता काटकर यूनिट का शुभारम्भ किया।

क्षतिग्रस्त सड़कों के लिए धन की मांग

नैनीताल। कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने मुख्यमंत्री धामी से भेंट कर भीमताल विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं के समाधान की मांग की। उन्होंने धारी, ओखलकांडा, रामगढ़ और भीमताल विकासखण्डों में आपदा के कारण क्षतिग्रस्त हुए मोटर मार्गों के पुनर्निर्माण के लिए आपदा मद से धनराशि करने का अनुरोध किया। मंत्री कैड़ा में बताया कि आपदा के चलते कई सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

परिक्रमा

फचैऽक

उलट फेर करि सकैं जेन जी, जन रया आ्व पैंलिये हौत
चुप रूणी न्हांती य पीढ़ी आ्ब, सत्यै हाली तौं तुमनि भौत
सत्यै हाली तौं तुमनि भौत, रीसलि टीएनएजर लाल है रई
कुर्की कैं आ्ब खसकै हानी, जेन जी जां तो काव है गई
बिरूजागर भै परीशान सबै, देशाक न्यनठुल भैन जी
नै मानन मनकि बातन यों, उलट फेर करि सकैं जैन जी।

गणेश पाण्डेय

कर्नल रजनीश जोशी ने फतह की यूरोप की सबसे ऊंची माउंट एल्ब्रुस चोटी

पिथौरागढ़। भारतीय सेना के कर्नल रजनीश जोशी ने यूरोप की सबसे ऊंची चोटी माउंट एल्ब्रुस फतल कर देश-प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। कर्नल जोशी ने अपनी इस उपलब्धि को उत्तराखण्ड के 25 गौरवशाली वर्षों को समर्पित किया। वह अब तक माउंट एवरेस्ट समेत विश्व के 45 शिखर चढ़ चुके हैं। भारतीय सेना के अनुभवी अधिकारी कर्नली जोशी के नाम कई रिकार्ड हैं।

बूंगाछीना गांव निवासी जोशी ने 14 अगस्त को 5642 मीटर ऊंची माउंट एल्ब्रुस की चोटी फतह की। यहाँ उन्होंने उत्तराखण्ड का प्रतीक चिन्ह दिखाकर प्रदेश के नाम सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि यह शिखर विजय देवभूमि उत्तराखण्ड की वीरता, साहस, संघर्षशीलता और हिमालय के प्रति अटूट प्रेम को समर्पित है। राज्य ने देश को अनेक महान सैनिक और पर्वतारोही दिए हैं। यह शिखर उसी गौरवशाली परम्परा को नमन है।

देवीधुरा में बनेगी बहुउद्देशीय पार्किंग

चम्पावत। देवीधूरा में 9.80 करोड़ की लागत से बहुउद्देशीय पार्किंग का निर्माण किया जायेगा। परियोजना के लिये विभागीय व्यय समिति ने सैद्धान्तिक मंजूरी दे दी है। परियोजना में 83 कारों की पार्किंग समेत शौचालय, केयर टेकर रूम की सुविधा होगी। सीएम के दिशा निर्देश पर आवास व राज्य सम्पत्ति विभाग ने धार्मिक और पर्यटन स्थलों में यातायात व्यवस्था सुगम बनाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। इससे देवीधुरा क्षेत्र के ग्राम देचमार में पार्किंग बनने से जाम से निजात मिलेगी।

देहरादून सचिवालय में सचिव आवास एवं राज्य सम्पत्ति विभाग डॉ.आर.राजेश कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक में परियोजना के तकनीकी, वित्तीय और भूमि सम्बन्धी पहलुओं पर चर्चा हो चुकी है। बैठक में क्षेत्र की वास्तविक जरूरत को देखते हुए पार्किंग की प्रस्तावित संरचना में भी बदलावा किया गया।

आपदा के घाव हरे हैं, मलबा अभी तक बिखरा है और खतरा भी बना हुआ

मरचूला के पास पत्थर गिरने का भय

तवाघाट-धारचूला हाईवे पर बेलीब्रिज टूट गया

महरगांव में मलबा गिरने से तीन मौत

रुद्रप्रयाग में पहाड़ी से पत्थर गिरा, एक मौत

ऐलागाड़ व जौलजीवी में भी जाम लग गया

कपकोट के सोराग गांव में भूधंसाव से डर

सिमली-ग्वालदम हाईवे में भी मलबा-बोल्डर

सावन की बरसात और हरियाली के साथ ही उत्तराखण्ड में आपदा के घाव अभी हरे हैं। कई जगह मलबा अभी तक बिखरा हुआ है और खतरा भी बना है। भारी वर्षात के बाद कुमाऊँ और गढ़वाल को जोड़ने वाले नेशनल हाईवे-309 पर मरचूला स्थित क्रोकोडाइल प्वॉइंट के पास पहाड़ी से बोल्डर गिरने से यातायात प्रभावित हुआ। इस स्थान पर अभी भी पत्थर गिरने का भय है। आपदा राहत कार्य के लिये तैनात जेसीबी इन स्थितियों के लिये तैनात की गई है।

सीमान्त के धारचूला-तवाघाट हाईवे पर कुलागाड़ के पास पहाड़ी से मलबा और बोल्डर गिरने से करीब 70 मीटर लम्बा बेलीब्रिज टूट गया, जिस कारण दर्जनभर ग्रामों का सम्पर्क कट चुका है। टनकपुर-तवाघाट हाईवे जौलजीबी के निकट और धारचूला से आगे ऐलागाड़ में तेज बरसात से जाम लग गया। कैलास मानसरोवर मार्ग मलघाट के पास मलबा आने का खतरा है। लिपुलेख मार्ग पर भी पत्थर-मलबा गिरा। राहत बचाव के लिये तैनात टीम मार्ग खोलने के लिये तत्पर है लेकिन आपदा के घाव तो हरे ही हैं। रानीखेत उपमण्डल के ताड़ीखेत विकासखण्ड के हरड़े गाँव में तेज बारिश से एक मकान का पिछला हिस्सा भरभराकर ढह गया। काकड़ीघाट-शीतला खेत मोटर मार्ग से जुड़े सम्पर्क मार्ग को भी बरसात में नुकसान पहुँचा है। बागेश्वर जिले के कपकोट में जनजीवन प्रभावित हुआ है।

धरमघर-चुचेर-मझखेत मोटर मार्ग की बदहाली से सफर में परेशानी हो रही है। करीब 20 किमी लम्बी इस सड़क का 19 किमी हिस्सा पीएमजीएसवाई और एक किमी हिस्सा लोनिवि के अधीन है। लम्बे समय से इसमें निर्माण नहीं हुआ है और जगह-जगह मलबा आने से सड़क क्षतिग्रस्त है। इसी प्रकार कपकोट के चचई क्षेत्र में सड़क होने के बावजूद ग्रामीणों को जूझना पड़ रहा है। चचई के सुम्यौड़ा तोक की हालत बेहद नाजुक है। बरसात में सड़क की हालत खराब होने कारण बीमारों को डोली में ले जाना पड़ता है। कपकोट के सोराग ग्राम में जमीन धंसने से लोगों में दहशत है। लाथी ग्रामसभा के चनुकी तोक में भी कई स्थानों पर जमीन खिसकने से ग्रामीण डरे हुए हैं।

प्रदेश में जलभराव, भूस्खलन और नदी-नालों के उफान का प्रभाव साफ दिख रहा है। पौड़ी के महरगाँव में पहाड़ी से मलबा गिरने से मकान टूट गया। मलबे की चपेट में माँ-बेटे और दो वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। रुद्रप्रयाग में पहाड़ी से गिरे पत्थर की चपेट में आने से दिल्ली निवासी 25 वर्षीय अंजली मौत के मुंह चली गई। कर्नाटक निवासी एक अन्य यात्री शिदप्पा घायल है। बारिश के कारण सिमली-ग्वालदम-अल्मोड़ा हाईवे पर भी मलबा आने से बीच-बीच में अवरोध हो रहा है। बीआरओ सड़क खुलवाने में मदद कर रही है। नारायणबगड़-बगोली के बीच नलगांव, आमसौड़ और कुलसारी थराली के बीच सुनला में भी दिक्कत हो रही है। इसी प्रकार देवाल-लोहाजंग हाईवे और हाटकल्याड़ी-सवाड़ मार्ग में मलबा आने से यातायात में ज्यादा ही दिक्कत हो रही है।

इस बीच आपदा वाले स्थानों पर प्रशासन द्वारा आंकलन कर प्रभावितों की सूची बनाई जा रही है ताकि उन्हें उचित मुआवजा मिल सके।

आदि बद्रीनाथ मंदिर का सौन्दर्यीकरण होगा

अल्मोड़ा। सोमेश्वर तहसील के कुवाली गांव स्थित ऐतिहासिक आदि बद्रीनाथ मन्दिर को धार्मिक पर्यटन के रूप में विकसित करने की तैयारी है। कुमाऊं मण्डल विकास निगम 90 लाख रुपये से इसको सहेजकर संरक्षण करेगा। इसमें धर्मधाला का जीर्णोद्धार कार्य और मुख्य मन्दिर तक करीब 200 मीटर क्षेत्र में टीम शेड का निर्माण होना है।

रानीखेत वन भूमि हस्तांतरण का प्रस्ताव

रानीखेत। डीएफओ अभिमन्यु सिंह ने नगर पालिका क्षेत्र का भ्रमण किया, इस दौरान पालिकाध्यक्ष अरुण रावत ने पालिका विस्तार को वनभूमि हस्तान्तरण का प्रस्ताव रखा। डीएफओ ने इस पर कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

सुमगढ़ को सड़क से जोड़ने की तैयारी

बागेश्वर। कपकोट-काण्डा विधानसभा क्षेत्र के दूरस्थ गाँवों को सड़क सुविधा से जोड़ने की तेजी है। इसमें विधायक सुरेश गढ़िया ने प्रमुख वन संरक्षक कपिल लाल से भेंट कर फुलवाड़ी मोटर मार्ग और सुमगढ़ को जोड़ने के लिये तप्तकुण्ड से छोरीधार तक मोटर मार्ग निर्माण हेतु आवश्यक वन भूमि हस्तान्तरण कार्य को आगे बढ़ज्ञने का अनुरोध किया है।

उपराष्ट्रपति का सम्बोधन

मसूरी। उपराष्ट्रपति सी.पी.राधाकृष्णन ने लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन प्रशासन अकादमी में 2024 बैच के आईएएस प्रशिक्षु अधिकारियों के प्रशिक्षणके दूसरे चरण के समापन समारोह को सम्बोधित किया। उन्होंने अधिकारियों से सेवाभाव और कर्तव्यबोध को अपने मार्गदर्शक मंत्र बनाने का आह्वान किया।

19 संस्थानों को एसआईटी का नोटिस

हरिद्वार। अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति घोटाले के मामले में एसआईटी ने 19 शिक्षण संस्थानों के संचालकों को एसआईटी ने नोटिस भेजते हुए थाने पहुंचकर बयान दर्ज कराने क निर्देश दिए हैं। इससे पहले टीम ने अल्पसंख्यक कल्याण विभाग से सभी संस्थानों से दस्तावेज तलब किए।

पिंडर घाटी सड़क बदाहली पर नाराज

बागेश्वर। डीएम अपूर्वा पाण्डे ने पिण्डर घाटी के दुर्गम क्षेत्रों के विभिन्न गांवों का स्थलीय निरीक्षण करते हुए सड़क, यातायात, आपदा प्रभावित मार्गों और मूलभूत सुविधाओं का जायजा लिया। सड़क और पुलिया की खराब स्थिति पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को तत्काल मरम्मत और रखरखाव के निर्देश दिए। साथ ही कर्मी के भूस्खलन क्षेत्र निरीक्षण करते हुए आवश्यक निर्देश दिये।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तुम दिल्ली हम.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

लिये अमूल्य निधि हैं। पर अब जमाना खराब आ गया। उर यह लगता है कि न जाने चोर-उठाईगीर कब इन्हें निकाल कर ले जाये, इसलिये अब सोचता हूँ कि इन्हें किसी कला प्रेमी सेठ के हाथों बेच दी दूं।' शेष चन्द को मालूम था कि औरंगजेब के दरबार में हिन्दू धर्म के अनुसार पूजा पाठ होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं था। पर सिक्कों के असली होने में भी उसे कोई शक नहीं था। उसने सोचा आम खाने से मतलब है, पेड़ गिनने से थोड़े ही। उसने प्रस्ताव किया, आपकी तलवार बेशकीमती है और मेरे सिक्के भी अमूल्य हैं, क्यों न हम दोनों आपस में ही इनका सौदा कर लें। निशेष चन्द भी यही चाहता था। उसने तुरन्त शेष चन्द का प्रस्ताव मान लिया। अत: तलवार व सिक्कों की अदला बदली हो गई। दोनों ने हाथ मिलाये, 'फिर मिलेंगे' कह कर एक दूसरे से विदा हुये। शेष चन्द सिक्कों की थैली लेकर सीधा एक जौहरी के पास पहुँचा तथा उसने उन्हें बेचने का प्रस्ताव किया। जौहरी ने उनको ध्यान से देखा। एक सिक्के को कुछ खुरच कर देखा गया। उसने शेष चन्द को बताया कि यह तो तांबे के सिक्के हैं। बड़ी सफाई से बाहर से सोने की पालिश की गयी है। शेष चन्द को बड़ा धक्का लगा। वह निशेष चन्द की तलाश में निकल पड़ा। उधर निशेष चन्द भी एक पुरानी वस्तुओं के व्यापारी के पास तलवार बेचने के उद्देश्य से गया। जाँच परख के बाद उस कला प्रेमी व्यापारी ने बताया कि यह तलवार तो तांबे की है। बाहर से चाँदी की पालिश चढ़ी है। निशेष चन्द भी शेष चन्द की तलाश में निकल पड़ा। दोनों में से प्रत्येक को मालूम हो गया कि दूसरा आदमी भी ऊँचे दर्जे का ठग है। दोनों एक-दूसरे को ठगने में कामयाब हो गये थे। दोनों एक-दूसरे को ढूंढ ही रहे थे कि एक गली में दोनों का आमना-सामना हो गया। उन्हें एक दूसरे से कोई शिकायत होने का प्रश्न नहीं था। दोनों ने हाथ मिलाया, निशेष चन्द ने कहा- 'मैं दिल्ली का ठग हूँ, तुम आगरा के। क्यों न हम दोनों आज से मिल कर ठगी करें। भला शेष चन्द को इसमें क्या आपत्ति हो सकती थी। अत: वह दोनों ठगी के लिये जंगल के रास्ते पर निकल पड़े, क्योंकि राहगीरों को ठगना अधिक आसान था तथा भागने के लिये जंगल अधिक उपयुक्त भी होते थे। जब दोनों जंगल के रास्ते चल ही रहे थे तो उन्हें बूटों की खम-खम व घुंघरूओं की छम छम की आवाज सुनाई पड़ी। वह सतर्क हो गये कि कोई राहगीर आ रहा है। थोड़ी ही देर में हरकारा आता हुआ उन्हें दिखाई दिया। हरकारे की लाठी में घुंघरू थे तथा बूटों में बड़ी-बड़ी लोहे की नालें। अत: यह खम-खम व छम-छम की आवाज इन्हीं चीजों की थी। उसने एक डाक का थैला कन्धे से पीछे की ओर लटकाया हुआ था। हरकारा जवान लगता था, कोई बीस-बाईस साल का। सिर के बाल करीने से कढ़े हुए, पैरों में जूते-मोजे, हाथों में दस्ताने। चेहरा बिल्कुल चिकना, रंग गोरा। ऐसा सुदर्शन जवान उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। निशेष चन्द व शेष चन्द ने उसे बुलाते हुए कहा- 'आओ हरकारा भाई, इधर ही थोड़ी देर बैठ कर बीड़ी पी लें। हरकारा उनके पास आ गया। उसने लाठी व थैला एक ओर रख दिया। थैला नीचे रखते समय खन-खन की आवाज आई। दोनों ठगों को यह समझते देर नहीं लगी कि थैले में रुपये हैं। उन्हें यह तो पहले से ही मालूम था कि हरकारे के थैले में चाँदी के रुपये भी इधर-उधर जाते हैं। अत: उन्हें लालच हो आया कि किस तरह यह थैला हाथ आये। फिर भी उन्होंने संयत बना रहना ही उचित समझा। बूढ़े ठग ने पूछा, 'कहाँ के रहने वाले हो?' उसने कहा- कानपुर का। अधेड़ ने भी पूछा- 'क्या नाम है तुम्हारा।' हरकारे ने उत्तर दिया- 'विशेष चन्द।' दोनों ठग बोले- 'तब तो तुम हमारे दोस्त हो गये। हमारा नाम भी निशेष चन्द व शेष चन्द है। एक दिल्ली का है, दूसरा आगरे का। तुम कानपुर के हो। तीनों अलग-अलग, पर नामी शहरों के रहने वाले। नाम भी मिलता-जुलता है।' हरकारे ने कहा- 'हाँ, आज से दोस्ती पक्की। यद्यापि मैं आप लोगों से उम्र में छोटा हूँ परन्तु दोस्ती के लिये उम्र कोई रुकावट नहीं होती।'

तीनों ने बीड़ियाँ पी। बूढ़ा व अधेड़ तो पहले ही भाँप गये थे कि विशेष चन्द का थैला सिक्कों से भरा है। विशेष चन्द ने भी एक ही नजर में देख लिया कि उन दोनों के पास भी कीमती चीजें हैं, चाँदी की तलवार व सोने के सिक्के, क्योंकि बूढ़े व अधेड़ ने जानबूझ कर किसी न किसी बहाने उसे यह दोनों चीजें दिखा दी थीं। कुछ देर इधर- उधर की बातें होती रहीं। फिर जवान (विशेष चन्द) ने कहा- 'मुझे प्यास लगी है, अगर थोड़ी देर आप मेरे थैले की रखवाली कर सकें तो, मैं थोड़ी दूर पर नदी में पानी पीकर आता हूँ। आधा घण्टा लगेगा।' दोनों ने कहा- 'बेफ्रिक होकर जाओ, हम यहीं पर रहेंगे।' जवान ने कहा, 'प्यास तो बहुत लगी है, पर सरकारी डाक व रुपयों का मामला है, मैं थैला अपने साथ ही ले चलता हूँ।' इस पर दोनों बोले, 'कैसी बात करते हो? हम पर यकीन ही नहीं? इतना बड़ा थैला लादकर कहाँ ले जाओगे। अगर हम पर यकीन नहीं है तो यह चाँदी की तलवार व सिक्के का छोटा थैला ले जाओ। तुम्हारे बड़े थैले की रखवाली हम करेंगे।' जवान को यह युक्ति अच्छी लगी। वह सिक्कों की छोटी थैली व तलवार लेकर पानी पीने नदी पर चल दिया व अपना डाक का थैला जिसमें सिक्के भी थे, दोनों के पास छोड़ गया। ज्यों ही विशेष चन्द दृष्टि से ओझल हुआ, दोनों ठग उसका थैला उठा कर भाग लिये। उन्होंने मुख्य रास्ता छोड़ दिया व एक पगडण्डी से तेजी से आगे बढ़ने लगे। भागते-भागते शेष चन्द थक गया, हालांकि वह उम्र में निशेष चन्द से बहुत छोटा था। निशेष चन्द ने कहा- 'लाओ थैला में ही पकड़ लेता हूँ।' बूढ़ा हो गया हूँ तो क्या, तुमसे तो अधिक ताकतवर हूँ।' थैला निशेष चन्द ने पकड़ लिया। फिर भी शेष चन्द उसके साथ-साथ नहीं चल पा रहा था। थोड़ी ही देर में निशेष चन्द, शेष चन्द से आधा मील अधिक आगे निकल गया। शेष चन्द ने बहुत कोशिश की कि वह निशेष चन्द के साथ ही चले, पर वह इतना तेल चल ही नहीं पाया। दोनों के बीच का फासला काफी बढ़ गया। जब निशेष चन्द ने देखा कि शेष चन्द बहुत पीछे रह गया है, तो उसने सोचा कि अच्छा हुआ उसे रुपये का हिस्सा नहीं करना पड़ेगा। वह पगडण्डी छोड़ कर एक तीसरे रास्ते से ही शहर की ओर बढ़ा। रास्ते में एक गाँव पड़ गया। अब समस्या यह थी कि यदि शेष चन्द भी इसी रास्ते से आया तो वह उसे दूर से ही देख लगा। गाँव में धान की मढ़ाई कुछ दिन पहले हुई थी। पुआल के कई ढेर इधर उधर पड़े थे। उसने उचित यही समझा कि अब पुआल के किसी ढेर के अन्दर ही छुपा जाय व रात होते ही निकल पड़। वह पुआल के एक ढेर के अन्दर छिप गया और पुआल के पूलों को फिर तरतीब से लगा दिया ताकि किसी को ता न चले। थोड़ी देर में शेष चन्द भी वहाँ पहुँच गया। उसने दूर तक दृष्टि दौड़ाई पर निशेष चन्द कहीं नजर नहीं आता था। ऐसी सम्भावना भी नहीं थी कि वह अब तक इतने बड़े गाँव को पार कर गया होगा। उसे शक हुआ कि हो न हो निशेष चन्द इन्हीं पुआल के ढेरों में से किसी एक के अन्दर छिपा है। पर समस्या यह थी कि पुआल के बीसियों ढरे थे, हरेक के पुआल को इधर-उधर करके देखना ठी नहीं था, क्योंकि गाँव वालों को उसके चोरी होने का सन्देह उत्पन्न हो सकता था। अत: उसे एक युक्ति सूझी। दो तीन सौ गज की दूरी पर एक बैल धान की कटी हुई जड़ों से निकाले हुये धान के कल्लों को चर रहा था। उसके गले में एक घण्टी बंधी थी। शेष चन्द ने यह घण्टी उतार ली। वह घण्टी को बजाता हुआ पुआज के हर ढेर के पास गया। एक ढेर के सामने ज्यों ही घण्टी बजी जो अन्दर से आवाज आई- 'हट-हट। इस बैल को भी चरने के लिये यही जगह बच गई थी?' वह अन्दर से 'हट-हट' कह कर बैल को भगाने लगा।

शेष चन्द ने कहा- 'भई बाहर निकल आओ, बैल नहीं, मैं हूँ शेष चन्द।' निशेष चन्द बाहर निकल आया। धन्धे में बेईमानी के लिये शेष चन्द व निशेष चन्द में तू तू- मैं मैं हुई। फिर दोनों ने आपस में तय किया कि गाँव पार करके किसी एकान्त जगह पर बैठ कर हरकारे के थैले के सिक्कों को बराबर बांट लिया जाय। वह दोनों गाँव से बाहर निकल कर जंगल में एक एकान्त जगह पर बैठे। थैला खोला गया। दोनों की आँखें यह देख कर फटी-फटी सी रह गई कि उसमें रुपये न होकर पत्थर व कुछ लोहें के टुकड़े थे। अब उन्हें अहसास हुआ कि वह दोनों ठग एक तीसरे ठग के द्वारा ठगे गये हैं। अत: उन्होंने थैली में से कंकर पत्थर फेंक दिये। लोहे के टुकड़े थैली में ही रहने दिये, क्योंकि इसे दो चार रुपये तो शहर में मिल ही सकते थे। वह दोनों विशेष चन्द की तलाश में शहर की ओर निकल पड़े क्योंकि उन्हें यकीन था कि वह किसी जोहरी के पास तलवार व सिक्के लेकर बेचने अवश्य जायेगा। अब तक यह पक्का विश्वास उन्हें हो चुका था कि वह कोई हरकारा-बरकारा नहीं था बल्कि एक ठग ही था।

उधर विशेष चन्द तलवार व सिक्के बेचने के लिये जोहरी के पास गया तो उसे पता चला किवह भी ठगा गया है। उसने सोचा कि उस थैली में लोहे के जो टुकड़े थे उसकी कीमत तो इस छोटी से ताँबे की तलवार व सिक्कों से अधिक ही बैठती। अत: वह शहर से जंगल की ओर उन दोनों ठगों की तलाश में उसी रास्ते से निकला, जिससे उनके आने की सम्भावना थी। वह चल ही रहा था कि उसे रास्ते में एक सुन्दर जूता मिला। उसे जूता बहुत अच्छा लगा, पर एक ही जूते का क्या लाभ जब तक उसका जोड़ीदार न मिले। उसने इधर उधर देखा, जोड़े का दूसरा जूता कहीं नहीं था। अत: उसने वह जूता ले जाना अनावश्यक समझा। वह आगे बढ़ गया। आधा मील ही चला होगा कि रास्ते में उसे पहले वाले जूते का जोड़ीदार जूता पड़ा मिल गया। अब उसे अफसोस हुआ कि पहले वाले जूते को क्यों नहीं उठा लाया। जूता अच्छा था, अत: वह तलवार, थौला व उस एक जूते को वहीं एक झाड़ी में छिपाकर पीछे वाले जूते को लाने के लिये चल पड़ा। जब तक वह वहाँ पहुँचा, कोई पहले वाला जूता उठा कर ले जा चुका था। वह वापस उसी स्थान पर पहुँचा जहाँ कि एक जूता, थैला व तलवार झाड़ी में छिपा गया था। वह यह देख कर सन्न रह गया कि झाड़ी के अन्दर से तीनों चीजें गायब थीं। अब बात उसकी समझ में आ गई कि यह ठगी का करतब निशेष चन्द व शेष चन्द के अलावा कोई नहीं कर सकता। उसने उचित यही समझा कि अकेले ठगी करना अब उसके बस की बात नहीं है। अत: उसने उन दोनों के साथ ठगी में शामिल होने का विचार कर लिया। उसी दिन अचानक उन तीनों का सामना भी हो गया। विशेष चन्द ने कहा, 'यह तो अब तय हो गया कि हम तीनों ठग ही है। एक दूसरे को ठग कर कोई चीज हासिल नहीं होने वाली। अब हम लोग तीनों एक साथ मिलकर ठगी करें तो मालामाल हो सकते हैं। उसने कहा कि अब सब लोग अपना अपना सही नाम ईमानदारी से बतायें व पता ठिकाना भी। बूढ़ा व अधेड़ ठग राजी हो गये। प्रस्ताव गलत नहीं था। विशेष चन्द ने बूढ़े से पूछा- 'आपका असली नाम क्यो है?' उसने कहा- 'मेरा नाम छोटेहै, मैं बरेली में बिहारीपुर में रहता हूँ।' यह सुनकर विशेष चन्द ने चौंकते हुए कहा- 'रहता तो मैं भी बिहारीपुर में ही हूँ, तुम वहाँ पर कहाँ रहते हो?' निशेष चन्द ने जवाब दिया- 'खन्ना जी के मकान के पास के तिर्मोजले मकान में।' अब विशेष चन्द के चौंकने की बारी थी। उसने कहा मकान तो मेरा भी वहीं है। 'मेरा नाम छेदा है।' शेष चन्द ने भी कहा- 'मेरा असली नाम पन्ना है।' मैं भी बिहारीपुर के उसी मकान में रहता हूँ, जहाँ कि आप दोनों। विशेष चन्द ने हाथों से दस्ताने निकाल दिये तो उन दोनों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके हाथ बूढ़ों की तरह हैं। उसने सिर से काले बालों का बिग भी उतार दिया तो देखते क्या हैं कि सिर में सारे बाल सफेद थे, एक भी काला बाल नहीं। नकली दांतों का सैट भी उसने निकाल दिया। मुँह पोपला हो गया। दोनों ने गौर से देखा तो चेहरे पर झुर्रियाँ मिटाने के लिये कोई चीज पोती हुई थी। अपने झाड़न से उसने चेहरा पोंछा तो निशेष चन्द चौंक पड़ा 'दादा जी आप।' यह कहते ही उसने स्वयं भी सफेद बालों का अपना बिग उतार फैंका, दस्ताने उतार दिये। चेहरे में झुर्रियाँ रंग से नकली बनाई गई थीं, उसे पोंछ डाला। अब वह बूढ़ा न होकर 20-22 साल का सुदर्शन नौजवान था। विशेष चन्द ने कहा- 'तुम मेरे ही ेते होकर मुझे ही ठगने चले थे, हूँ?' अब शेष चन्द की बारी थी। उसने भी अपनी नकली मूछें उतार फेंकी, चेहरे पर पोता गया रंग पोंछ डाला। उसने विशेष चन्द से कहा, 'पिता जी गलती हो गई। मैंने आपको कतई नहीं पहचाना।' उसने निशेष चन्द्र से कहा- 'बेटा तूने भी हम लोगों को पहिचानने में गलती की है।' निशेष चन्द बोला- 'पिता जी यह तो संयोग ही था कि हम तीनों बाप-बेटे-पोते ही आपस में टकरा गये।' आगे से ऐसी नौबत नहीं आनी चाहिये। अब हमें ठगी केलिये अलग अलग शहरों में चला जाना चाहिये।

सुरेश मेडिकल स्टोर
नियर- टैक्सी स्टैंड
मदकोट रोड
मुनस्यारी
मो.- 8077929044, 9756822576

HIMALAYAN
MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav,
Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

त्यौहार-उत्सवों की भरमार में झूमता समाज

- सातू-आठू पर झोड़ा-चांचरी के साथ झूमे
- दानपुर में पारम्परिक घ्यू त्यार का उल्लास
- देवीधुरा कौतिक में बग्वाल देखने उमड़े
- गबला पूजा, दातू मेले की 50वीं वर्षगांठ
- जन्माष्टमी के लिये सजने लगे हैं मन्दिर
- नन्दा-सुनन्दा उत्सव को लेकर तैयारियां पूरी

इन दिनों त्यौहार-उत्सवों की भरमार में समाज झूम रहा है। लोकपर्वों के साथ ही बड़े त्यौहारों को लेकर पूजा-अनुष्ठान उत्सव हो रहे हैं। तीज के उत्सव के साथ ही रक्षाबन्धन का बड़ा त्यौहार अनुष्ठानों के साथ सम्पन्न हुआ। परम्परागत तरीके से श्रावणी उपाकर्म के लिये सामुहिक रूप से ग्रामीण जुटे। चम्पावत स्थित माँ बाराही देवी के प्रांगण में बग्वाल खेली गई। देवीधुरा कौतिक देखने के लिये बड़ी संख्या में लोग उमड़े।

पहाड़ का सातू-आठू त्यौहार पर झोड़ा-चांचरी के साथ लोग झूमे। घरों में होने वाले पूजन में महिलाओं ने दूबधागा धारण कर नए अनाज और बिरुड़ा को प्रसाद रूप में वितरित कर सुख समृद्धि की कामना की। गौरा-महेश्वर के पूजन के साथ ही पिथौरागढ़ मुख्यालय में उत्सव के लिये आसपास के ग्रामीण और शहरी जुटे। गंगोलीहाट बेरीनाग, डीडीहाट के कई ग्रामों में परम्परागत रूप से ठुल खेल, झोड़े लगाए गये। अस्कोट क्षेत्र में हीरन-चीतल नृत्य की पुरानी परम्परा मनाई गई। सीमान्त की घाटियों में गबला पूजा का उल्लास रहा। दातू मेले की 50वीं वर्षगांठ पर परम्परागत रूप से क्षेत्रवासी जुटे और चारों ओर सुख शान्ति की कामना की।

इस बीच घी संक्रान्ति और नाग पंचमी का उत्सव भी मनाया गया। बागेश्वर दानपुर में पारम्परिक घ्यू त्यार का उल्लास देखने को मिला। कपकोट क्षेत्र की तीन पट्टी दानपुर के ग्रामीणों ने झोड़ा-चांचरी के साथ खुशियां मनाई। सरयू, रामगंगा, पिण्डर, महरगाड़ और रेवती घाटी के गाँवों में ग्रामीणों ने सामूहिक रूप से आयोजन में प्रतिभाग किया।

प्रदेश में नन्दाष्टमी के आयोजन के लिये तैयारियां हैं। मर्तोली सहित अन्य स्थानों पर नन्दा पूजा के लिये लोग जुटेंगे। नन्दा-सुनन्दा कौतिक के लिये अल्मोड़ा सहित अन्य स्थानों पर तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। इसी प्रकार जन्माष्टमी के लिये मन्दिर सजने लगे हैं।

डंगोली-बालीघाट-धरमघर मोटर मार्ग बनेगा स्टेट हाइवे

17 पुलों का उच्चीकरण होगा, 40.13 लाख रुपये की प्रशासनिक व वित्तीय मंजूरी

- पेड़ों की वलि पीड़ादायक
- जंगल बचाने की अपील

बागेश्वर/बेरीनाग। क्षेत्र की पुरानी सड़कों में से एक डंगोली-बालीघाट-धमघर मोटर मार्ग को स्टेट हाईवे का दर्जा मिलते ही इसके चौड़ीकरण का काम तेज होने जा रहा है। वन विभाग की स्वीकृति के अलावा 40.13 लाख रुपये की प्रशासनिक मंजूरी हो चुकी है। बताया गया है कि इससे लगभग 80 ग्रामों की 40 हजार से अधिक जनसंख्या को बेहतर यातायात सुविधा मिलेगी। इस बीच प्रकृति प्रेमियों को इस पूरे काम में पेड़ों की वलि बेहद पीड़ादायक लग रही है। उन्होंने जंगल बचाने की अपील की है। कहा है कि जैव विविधता से भरपूर जंगल व जलस्रोतों को बचाकर ही इस कार्य को किया जाए अन्यथा अन्य परेशानियां होंगी।

बताते चलें कि इस मार्ग का निर्माण 1978 में हुआ था और चौड़ीकरण की मांग भी हुई। अब प्रथम चरण में डंगोली सैलानी, दाड़िमखेत, धरमघर-पांखू सातसिलिंग मोटर मार्ग के 39 से 93 बीच स्थित 17 पुलों का क्लास बी लोडिंग से क्लास ए लोडिंग में उच्चीकरण होगा। पुलों के उच्चीकरण के लिये यूटिलिटी शिफ्टिंग के कार्य हेतु प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। शासन के अपर सचिव महावीर सिंह के हस्ताक्षर से लेनिवि के प्रमुख अभियन्ता को इस सम्बन्ध में पत्र जारी किया गया है।

कृष्ण जन्माष्टमी, नन्दाष्टमी, लोकपर्व आठू-सातू की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

दीवान सिंह धर्मशक्तू

जोहार नगर, शिवमन्दिर के पास

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

हेमन्त सिंह मर्तोलिया

चिकित्सा अधीक्षक

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भीमताल

मिलम बेक हाउस (नियर- टैक्सी स्टैंड चौराहा) मुनस्यारी

सम्पर्क- 8941807388

MILAM BAKE HOUSE CRAFTED IN THE MOUNTAINS

पहाड़ों में तैयार, स्वाद से भरपूर। हिमालय की वादियों से आपके स्वाद तक। आपके लिये लेकर आया है ताजे स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण बेकरी उत्पाद।

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)